SKU शोध संचार

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

Impact Factor SJIF 2025 – 5.306

अंक-3, खण्ड-3, जुलाई - सितम्बर 2025 E-ISSN : 2584-2900

संस्कृत साहित्य में आयुर्वेद का विश्लेषण

सत्यवती चौरसिया

सहायक प्राध्यापक (संस्कृत)

श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र)

शोध सारांश

संस्कृत साहित्य में आयुर्वेद का विशेष स्थान माना जाता है। आयुर्वेद दो संस्कृत शब्दों 'आयुष' जिसका अर्थ 'जीवन' है तथा 'वेद' जिसका अर्थ 'विज्ञान' है, से मिलकर बना है अत: इसका शाब्दिक अर्थ है 'जीवन का विज्ञान'। आयुर्वेद अनादि है। ब्रह्मा के मुख से मुखरित यह आयुर्वेद सृष्टि के साथ-साथ चलता हुआ अक्षुण्ण स्वास्थ परंपरा की रक्षा कर रहा है। संस्कृत और आयुर्वेद दोनों का आध्यात्मिक महत्व है, एवं दोनों का एक साथ अध्ययन करने से व्यक्ति को ज्ञान और जीवन की पूर्णता का अनुभव होता है। आयुर्वेद को वेदों से जोड़ा गया है और वेद संस्कृत में लिखे गए हैं। अतः हमें आयुर्वेद के ज्ञान के लिए संस्कृत भाषा का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक होता है। आयुर्वेद भारतीय ज्ञान चिकित्सा प्रणाली का मूल ज्ञान संस्कृत में लिखा गया है। संस्कृत भाषा आयुर्वेद के सिद्धांतों, सूत्रों, जड़ी-बूटियों, उपचार, विधियों और जीवन शैली प्रबंधन के बारे में जानकारी का भंडार है। आयुर्वेद के ग्रंथों, जैसे-चरक संहिता और सुश्रुत संहिता को संस्कृत में लिखा गया है एवं संस्कृत का ज्ञान आयुर्वेद को समझने, समझाने एवं अभ्यास के लिए अति आवश्यक है। संस्कृत को 'ज्ञान का भंडार' माना जाता है, और आयुर्वेद का अधिकांश ज्ञान इसी भाषा में संकलित है। जैसा कि आचार्य चरक ने कहा है-

"हिताहितं सुखं दुःखमायुस्तस्य हिताहितम् ।

मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्यते।।" (च. सू. स. ४१)

यह श्लोक आयुर्वेद को परिभाषित करता है, जिसका अर्थ है कि वह ज्ञान जो आयु के लिए हितकर (अच्छा), अहितकर (बुरा), सुखकर (सुख देने वाला), और दुःखकर (दुःख देने वाला)

पदार्थों, गुणों, और कर्मों का वर्णन करता है, और आयु के प्रमाण व स्वरूप को बताता है, उसे आयुर्वेद कहते हैं।

अर्थात आयुर्वेद चिकित्सा शास्त्रों में आचार्यों ने विषय का विस्तृत वर्णन ना करते हुए उन्हें एकसूत्र रूप में वर्णित किया है। वनों औषधियों से प्राप्त आयुर्वेद चिकित्सा को मूल संस्कृत भाषा से ही पहचाना जाता है। वन औषधीय में निहित द्रव्यों को संस्कृत नाम से सरलतम् रूप से समझ सकते हैं। अर्थात आयुर्वेद की शिक्षण व्यवस्था में संस्कृत भाषा प्रमुख माध्यम है। वैश्विक लोकप्रियता का अनुमान संस्कृत भाषा में निहित है। आयुर्वेद एक अत्यंत प्राचीनतम् चिकित्सा पद्धति है। इस प्रकार आयुर्वेद में संस्कृत भाषा का ज्ञान निहित है।

बीज शब्द - संस्कृत, आयुर्वेद, प्राचीनतम विज्ञान, आध्यात्मिक, मंत्र।

प्रस्तावना

आयुर्वेद का अर्थ है' जीवन का विज्ञान' इसके मूल सिद्धांत, उपचार, विधियाँ और जीवन शैली संबंधी दिशा निर्देश सभी संस्कृत साहित्य में निहित है। संस्कृत सिर्फ एक भाषा ही नहीं अपितु भारतीय संस्कृति की प्राण वायु है। भाषाएँ एक संपूर्ण भू भाग के जीवन की सांस्कृतिक चेतना की संवाहक होती हैं। संपूर्ण विश्व को विश्व बंधुत्व की भावना सदियों पहले संस्कृत साहित्य से ही मिली है, जिस प्रकार इस श्लोक द्वारा स्पष्ट होता है -

अयं निजः परोवेतिगणनालघुचेतसाम्।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

यह मेरा है, वह पराया है, ऐसे छोटें विचार के व्यक्ति करते हैं।

उच्च चरित्र वाले लोग समस्त संसार को ही परिवार मानते हैं॥

अर्थात संस्कृत साहित्य में छोटे, बड़े का कोई भेदभाव नहीं होता, इसमें संपूर्ण पृथ्वी को ही अपना परिवार माना जाता है।

पाश्चात्य द्वारा भारतीय ग्रंथों जैसे श्रीमद्भागवत गीता और हितोपदेश का अनुवाद विशेष उल्लेखनीय है। संस्कृत सिर्फ भाषा ही नहीं ,बल्कि संपूर्ण भारत का अभिमान भी है। संस्कृत वाल्मीकि, आर्यभट्ट, कालिदास, वेदव्यास एवं प्राचीन विद्वानों की भाषा रही है। आयुर्वेद एवं संस्कृत का घनिष्ठ संबंध है, जिसमें अनेक ग्रंथों में यह भाषा देखने को मिलती है। अतः आयुर्वेद में संस्कृत भाषा को नकारा नहीं जा सकता। क्योंकि चरक संहिता एवं आयुर्वेद संहिता में अनेक बीमारियों का इलाज करने के लिए ,बताए गए इलाज संस्कृत भाषा में ही निहित है। हमारी समस्त परंपराएं संस्कृत लिस्ट हैं क्योंकि संस्कृत भारत की प्रतिष्ठा है। आयुर्वेद में संस्कृत का स्थान इस प्रकार है, जैसे कि शरीर में शिरोभाग का है। ब्रह्मवैवर्त पुराण एक महत्वपूर्ण हिंदू पुराण है, जो आयुर्वेद की उत्पत्ति का वर्णन करता है।

ब्रह्मा ने अपना ज्ञान सूर्यदेव (भास्कर) को दिया, जिन्होंने इसे अपने शिष्यों धन्वंतरि को सिखाया। इस प्रकार, आयुर्वेद के ज्ञान का प्रवाह ब्रह्मा से शुरू हुआ और फिर कई शिष्यों के माध्यम से आगे बढ़ा, जिसने चिकित्सा ज्ञान को अगली पीढ़ियों तक पहुँचाया। आयुर्वेद को अथर्ववेद का उपवेद भी माना जाता है, जो इसके प्राचीन होने का एक और प्रमाण है। ऋग्वेद में भी औषधीय पौधों के उपयोग का उल्लेख मिलता है, जो आयुर्वेद की प्राचीनता को दर्शाता है। ब्रह्मवैवर्त पुराण (१.१६.९.१०) के अनुसार यह है' पंचम वेद 'है। परंतु अन्य आचार्य इसे अथर्ववेद का उपांग मनाते हुए वेदांग मानते हैं। संस्कृत का संबंध आयुर्वेद से है इसका प्रमाण हमें अथर्ववेद के अध्ययन से प्राप्त होता है। जिसमें अथर्ववेद में निहित वैद्यक साहित्य भी सबसे प्राचीन माना जाता है, जो तीनों वेदों के मंत्रों का संग्रह है। अथर्ववेद में रोगों के मंत्रों तथा औषधि प्रयोग दोनों के द्वारा चिकित्सा का विधान बतलाया गया है। रोगोपचार के निवारण हेतु मंत्रों का संग्रह हमें अथर्ववेद से प्राप्त होता है। अथर्ववेद की चिकित्सा में ग्रह आदि को दूर करने के लिए मंत्र और रोग के लिए औषधि चिकित्सा का विधान है। जहां आयुर्वेद में चरक ने "धर्मार्थ काम मोक्षणां आरोग्यं मूलमुत्तमम्" इस संस्कृत श्लोक का अर्थ है, कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष - ये चारों पुरुषार्थ (मानव जीवन के लक्ष्य) का मूल आधार उत्तम आरोग्य (अच्छा

स्वास्थ्य) है। स्वस्थ शरीर के बिना इन लक्ष्यों को प्राप्त करना संभव नहीं है। अर्थात आरोग्य को चतुर्विध पुरुषार्थों का मूल माना है। इस प्रकार -

धर्म: नैतिक कर्तव्य और सही आचरण

अर्थ: धन और भौतिक संपत्ति.

काम: सुख और आनंद की इच्छा.

मोक्ष: जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति (मुक्ति)

आरोग्य के अपहर्ता रोग है, तथा ये रोग जीवित के श्रेयस के भी अपहर्ता हैं। चरक ने तो सुख-दुख हित एवं अहित को आयु मानकर आयु का हिताहित और मान जहां वर्णित है उसे आयुर्वेद कहा है। परंतु सुश्रुत ने इस आयुर्वेद शब्द का निर्वाचनआयु: अस्मि विधते आयु विधते अनेन, से आयु को प्राप्त करने वाला शास्त्र आयुर्वेद को माना है। संस्कृत को कंप्यूटर की भाषा कहा जाता है और इसकी उत्पत्ति के संदर्भ में कुछ मान्यताएं हैं की संस्कृति की उत्पत्ति भगवान शंकर जी के तांडव नृत्य के समय उनके डमरू से निकले स्वरों से हुई थी। कहा जाता है कि भगवान शंकर ने 14 बार डमरू बजाई थी, इनसे जो शब्द निकले उन्हें महेश्वर नाम दिया गया। बाद में महर्षी पाणिनी ने इसे व्याकरण बनाकर भाषा के रूप में लिपिबद्ध किया और इस तरह संस्कृत का जन्म हुआ। संस्कृत को कंप्यूटर भाषा के अनुकूल कई विशेषज्ञों ने माना है, और इसे सबसे उपयुक्त भाषा माना गया है। स्वास्थ्य का महत्व चरकसंहिता जैसे प्राचीन ग्रंथों में भी इस बात पर ज़ोर दिया गया है, कि स्वस्थ शरीर ही इन चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति का सबसे महत्वपूर्ण साधन है।

बीमारियाँ इन कल्याणकारी लक्ष्यों और जीवन के सुख को छीन लेती हैं, इसलिए अपने शरीर को स्वस्थ रखना सबसे पहला कर्तव्य होना चाहिए। एक स्वस्थ व्यक्ति ही अपने और समाज के लिए उपयोगी बन सकता है, और आत्म-ज्ञान व परम आनंद प्राप्त कर सकता है। क्योंकि यह विज्ञान प्राचीन ऋषि मुनियों के द्वारा निर्मित था एवं संस्कृत भाषा भी प्राचीन होने के कारण इन दोनों का घनिष्ठ संबंध होना संभव माना गया। जैसा कि आयुर्वेद का नाम लेते ही हमारे दिमाग में चरक एवं सुश्रुत का नाम सर्वप्रथम आता है। आचार्य चरक, संहिता निर्माण के

साथ-साथ, वन -वन, स्थान- स्थान, घूम-घूम कर रोगी व्यक्ति की चिकित्सा सेवा किया करते थे। तथा इसी कल्याणकारी कार्य तथा विचरण क्रिया के कारण उनका नाम 'चरक 'प्रसिद्ध हुआ। चूँकि संस्कृत एक वैज्ञानिक रूप से संरचित भाषा है, जो आयुर्वेद जैसे विषयों के लिए सटीक और स्पष्ट अभिव्यक्ति प्रदान करती है। सांस्कृतिक एवं बौद्धिक एकीकरण का संबंध संस्कृत और आयुर्वेद के सामंजस्य का प्रतिनिधित्व करता है।

भाषाएँ सदैव नदियों की भांति प्रवाहमान होती हैं, जिसके द्वारा देश, काल, संस्कृति, सभ्यताएं विकसित होती हैं। भारतीय संस्कृति की विशेषता सदियों से प्राचीन और नवीनता का सामंजस्य बनाए रखना है। आयुर्वेद की मूल भाषा शैली संस्कृत है आज यूरोप अमेरिका, इजरायल, जर्मनी सहित दुनिया के 200 विश्वविद्यालय में संस्कृत भाषा का अध्ययन अध्यापन कराया जा रहा है। अतः आयुर्वेद व आयुर्वेद से संबंधित सभी पाठ्यक्रमों के विषय की भाषा संस्कृत है। इसके ज्ञान से ही हम जन-जन को आयुर्वेद का ज्ञान दे सकेंगे।

संस्कृत का आयुर्वेद में महत्व से संबंधित कुछ प्रमुख बिंदुओं पर प्रकाश डालेंगे, जैसे कि प्राचीन आयुर्वेद ग्रन्थों के अंतर्गत संस्कृत प्राचीनतम भाषा होने के कारण आयुर्वेद के चिकित्सा सिद्धांत एवं प्रयोजन संस्कृतम हैं, जैसा कि चरक सूत्र से लिया गया श्लोक "प्रयोजनं चास्य स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणं आतुरस्य विकार प्रशमनं च"। ३ (च. सू. ३०/२६) अर्थात आयुर्वेद चिकित्सा आचार्य ने विषय को विस्तृत वर्णन न करते हुए इसे सूत्रों के माध्यम से समझाया है।

आयुर्वेद के मुख्य दो प्रयोजनों को बताता है: पहला, स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा करना, और दूसरा, आतुर (रोगी) व्यक्ति के रोग का प्रशमन (इलाज) करना।

आयुर्वेद के ये दो मुख्य लक्ष्य हैं:

स्वास्थ्य का संरक्षण।

रोग होने से पहले ही स्वस्थ व्यक्ति को रोग मुक्त बनाए रखना।

रोग का शमन।

जो व्यक्ति रोगी है या किसी बीमारी से पीड़ित है, उसके रोग का उपचार करना।

यह श्लोक आयुर्वेद के समग्र उद्देश्य को स्पष्ट करता है - समग्र रूप से जीवन को स्वस्थ और आनंदमय बनाना। अर्थात हम आयुर्वेद के सिद्धांतों सूत्रों व विद्धान को अपनाकर आज आधुनिक दौर में व्यक्ति को स्वस्थ बनाने का पूर्ण प्रयास कर सकेंगे। आज की व्यस्त जीवन शैली में प्रत्येक व्यक्ति अपने खान-पान एवं रोजमर्रा की जीवन शैली को भूलता जा रहा है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी व्यस्तता के कारण प्रकृति के नियमों और अपने स्वास्थ्य के विकारों को अनदेखा कर रहा है, जिससे आने वाले समय पर वह दिन व दिन थकान व अस्वस्थ होता चला जाएगा। आज वर्तमान परिपेक्ष में हम जन-जन तक आयुर्वेद को पहुंचा कर सभी को रोग मुक्त कर सकेंगे। आयुर्वेद में निहित वन औषधीय का वर्णन 'नाम रूप विज्ञानं' से पृथक रूप से मिलता है। प्राचीन आयुर्वेद ग्रंथ संस्कृत में हैं जैसे -चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, अष्टांगहृदयम आदि संस्कृत भाषा में रचित हैं। संस्कृत की निघण्टु परंपरा ने औषधि विज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

आयुर्वेद वैज्ञानिक एवं दार्शनिक दृष्टिकोण का आधार माना जाता है। आयुर्वेद केवल चिकित्सा ही नहीं, बल्कि दर्शन जीवन शैली और नैतिकता से भी जुड़ा है। इसमें निहित तत्व दोष धातु मल प्रकृति रस एवं गुण आदि सिद्धांतों को वैज्ञानिक ढंग से व्यक्त किया गया है। दार्शनिक दृष्टिकोण से संस्कृत आयुर्वेद में केवल रोग निवारण नहीं, अपितु जीवन को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की दिशा में ले जाने का दर्शन भी माना गया है। आयुर्वेद में द्रव्य, गुण, कर्म, कारण आदि तत्वों का वर्णन है, जो सीधे सांख्य -न्याय दर्शन से जुड़ा है। इन दार्शनिक तत्वों का सूक्ष्म विवेचन संस्कृत भाषा के कारण ही संभव होता है। संस्कृत की दार्शनिक परंपरा में सत्व, रजस् तमस तथा आयुर्वेद के वात, पित्त, कफ दोनों के बीच सामंजस्य स्थापित होता है। संस्कृत ग्रन्थों के अध्ययन से यह पता चलता है, कि रोग केवल शारीरिक नहीं होते, बल्कि मन और आत्मा से भी जुड़े होते हैं। अतः ध्यान, योग, सत्संग और सदाचार आयुर्वेद में स्वास्थ्य के दार्शनिक आयाम माने गए हैं।

संस्कृत एवं आयुर्वेद के महत्व में वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रत्येक शब्द व्युत्पत्ति आधारित अर्थ होता है। जैसी -

आयु- शरीर, इंद्रिय, मन और आत्मा का संयोग।

विकार- "विषेषे कारयति "

अर्थात् अस्वाभाविक स्थिति इस प्रकार संस्कृत वैज्ञानिक शब्दावली को आत्मनिर्भर बनाती है।

संस्कृत एवं आयुर्वेद के महत्व में भाषाई संरचना एवं सूत्र आत्मकता दृष्टिगोचर होता है। संस्कृत भाषा की सूत्र शैली ने चिकित्सा सिद्धांतों को संक्षेप में स्मरणीय एवं व्यवहारिक बनाया है जैसा कि उदाहरण स्वरूप बताया गया है "त्रयो दोषाः समनयाः शरीरस्य"। (च. स.) ४

इसमें केवल कुछ शब्दों में संपूर्ण शारीरिक संतुलन का आधार प्रस्तुत किया है। आयुर्वेद में औषधि विज्ञान एवं संस्कृत नामकरण का बहुत महत्व बताया गया है। वनस्पति, धातु, रसायन रत्न आदि सभी का नामकरण संस्कृत में है। संस्कृत नाम औषधीयो के स्वरूप, गुण, रस, वीर्य व प्रभाव का संकेत देते हैं। (जैसे -"अमृत" - अमृतव प्रदान करने वाली, " हरिद्रा"- हरित वर्ण से युक्त) इस प्रकार संस्कृत भाषा से औषधि की पहचान एवं गुणधर्म स्पष्ट हो जाते हैं और हम मनुष्य का उपचार आसानी से कर सकते हैं संस्कृत भाषा की वैज्ञानिकता और तर्क शक्ति के कारण आज भी आयुर्वेद विश्व भर में अध्ययन का विषय है। आधुनिक भाषाओं के अनुवाद होते हुए भी मूल संस्कृत ग्रंथों का अध्ययन किए बिना पूर्ण ज्ञान संभव नहीं है।

निष्कर्ष

संस्कृत और आयुर्वेद दोनों भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर हैं, जिनका संरक्षण और प्रचार प्रसार मानव कल्याण के लिए आवश्यक है। आयुर्वेद का मुख्य आधार संस्कृत है। इसके बगैर आयुर्वेद का प्रमाणिक अध्ययन संभव नहीं है। संस्कृत भाषा की शुद्धता संक्षिप्त तथा सूत्रआत्मक शैली ने आयुर्वेद को सूत्रबद्ध संगठित एवं परंपरागत रूप से संरक्षित रखा।

आयुर्वेद केवल चिकित्सा शास्त्र ही नहीं, बल्कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र का मार्गदर्शन करने वाला एक समग्र दर्शन है। इस शास्त्र का संपूर्ण ज्ञान संस्कृत भाषा में रचित है। विभिन्न

आयुर्वेद ग्रंथ जैसेचरक संहिता -, सुश्रुत संहिता, अष्टांगहृदय, भाव प्रकाश आदि आयुर्वेद ग्रंथों की रचना संस्कृत भाषा में होने के कारण ही आयुर्वेद की वैज्ञानिक एवं दार्शनिक दृष्टि आज तक सुरक्षित है। संस्कृत के व्यकरणीय वैभव एवं तर्क युक्त अभिव्यक्ति के कारण आयुर्वेद की चिकित्सापद्धति दार्शनिक पृष्ठभूमि -, द्रव्य गुण विज्ञान, पंचकर्म, रोग निदान तथ-ा आहार विहार संबंधी नियम आज भी समान रूप से प्रासंगिक हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. चरक सूत्र सहिता (41)
2. ब्रह्मवैवर्त पुराण (.1.16.9.10)
3. चरक सूत्र (26/30)
4. चरक सहिंता (नय भारतीय आयुर्विज्ञान संपदा संस्थाराष्ट्री)
5. शर्मा, आचार्य प्रियवृत् - नामरूप विज्ञानं
6. शर्मा, आचार्य प्रियवृत् - आयुर्वेद का वैज्ञानिक इतिहास
7. आचार्य पंतजलि, व्याकरणं महाभाष्य
8. चरक सहिंता, सूत्र स्थान, चौकम्भा संस्कृत पब्लिकेशन वाराणसी (2009)